

डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 4, एक मौलिक भेद, गरीबी की भूमिका

© 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक हैं जो वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह सत्र 4 है, एक कट्टरपंथी भेद, गरीबी की भूमिका।

धर्मोपदेश का शीर्षक एक कट्टरपंथी भेद है, और इस धर्मोपदेश के लिए मैं जो पवित्रशास्त्र का अंश चुन रहा हूँ वह है प्रेरितों के काम 4:32 से 37।

अब, विश्वास करने वालों का पूरा समूह एक दिल और एक आत्मा का था। किसी ने भी किसी भी संपत्ति पर निजी स्वामित्व का दावा नहीं किया, लेकिन उनके पास जो कुछ भी था वह सब साझा था। प्रेरितों ने बड़ी ताकत के साथ प्रभु यीशु के पुनरुत्थान की गवाही दी।

उन सब पर बड़ी कृपा थी। उनमें कोई भी ज़रूरतमंद नहीं था, क्योंकि जितने लोगों के पास ज़मीन या घर थे, उन्होंने उसे बेच दिया और जो कुछ बेचा गया था, उसका पैसा लाकर प्रेरितों के पैरों पर रख दिया और जो भी ज़रूरतमंद था, उसे बाँट दिया गया।

साइप्रस का निवासी लेवी यूसुफ था, जिसे प्रेरितों ने बरनबास नाम दिया, जिसका अर्थ है प्रोत्साहन का पुत्र। उसने अपना एक खेत बेचा, फिर पैसे लाकर प्रेरितों के चरणों में रख दिए। यह प्रभु का वचन है।

ईश्वर का धन्यवाद। ईसाई आंदोलन के शुरुआती दशकों में, ईसा मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, विश्वासियों के छोटे-छोटे समूहों ने सामुदायिक जीवन शैली की वकालत करके यीशु की शिक्षाओं के अनुसार अपने जीवन को ढालना शुरू कर दिया, जिसमें सभी संपत्तियों और संसाधनों को साझा करना और विनम्रता की पारस्परिक भावना शामिल थी। ल्यूक-एक्ट्स के बाइबिल लेखक ने बताया कि मसीह में उन विश्वासियों ने जिनके पास ज़मीन और घर थे, उन्होंने अपनी वस्तुओं और संपत्तियों को बेच दिया और अपने संसाधनों को प्रेरितों को दे दिया, जिन्होंने अपने संसाधनों को गरीबों में वितरित कर दिया ताकि उनके विश्वास के समुदाय में किसी को भी ज़रूरत न पड़े।

प्रारंभिक चर्च की इस सांप्रदायिक प्रतिक्रिया को ईसाई शिष्यत्व के आह्वान के अनुसार ईमानदारी से जीने के रूप में माना जाता था, उस समय जब आस्था के समुदाय ने प्रभु की आसन्न वापसी की आशा की थी। हालाँकि, जैसे-जैसे साल दशकों में बदल गए और मसीह का दूसरा आगमन नहीं हुआ, साझा संसाधनों और सामुदायिक जीवन के इस सिद्धांत का ईसाई आस्था के समुदायों में उत्साहपूर्ण पालन कम हो गया। 11वीं शताब्दी तक, चर्च के भीतर मानक प्रथाओं ने इसे भ्रष्ट और खराब तरीके से संचालित कर दिया था।

चर्च के अधिकारियों के अधिकार पर चर्च के भीतर और आम जनता दोनों द्वारा व्यापक रूप से सवाल उठाए गए थे। पोप ग्रेगरी VII के शासनकाल के दौरान, 1073 से 1085 तक, इन प्रथाओं को जांच के दायरे में लाया गया, जिसके परिणामस्वरूप ग्रेगोरियन सुधार नामक चर्च सुधारों की एक व्यापक प्रणाली सामने आई। चर्च नेतृत्व की नियुक्ति की दो प्राथमिक प्रथाओं पर सवाल उठाए गए, जिसमें धर्मनिरपेक्ष नेताओं द्वारा नेताओं की नियुक्ति, ले इनवेस्टीचर और सिमोनी की प्रथा, चर्च कार्यालय की खरीद शामिल थी।

सिमोनी भी चर्च द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली एक प्रथा थी, जिसमें जागीरदारों को भूमि प्रदान की जाती थी, जिन्होंने चर्च को उनके उपयोग के लिए भुगतान किया था। आम निवेश और सिमोनी दोनों ने चर्च पदानुक्रम के नैतिक पतन को जन्म दिया। इसकी अप्रभावीता ने हर स्तर पर प्रभाव डाला, जिसके परिणामस्वरूप मध्ययुगीन समाज के बाकी लोगों द्वारा चर्च नेतृत्व के प्रति अविश्वास बढ़ता गया।

जॉन 10 में चर्च के नेता को चरवाहे के रूप में वर्णित जॉन के सुसमाचार पर आधारित अपने फैसले के आधार पर, ग्रेगोरियन सुधार में पोप द्वारा आम निवेश और सिमोनी दोनों को प्रतिबंधित कर दिया गया था। चर्च के नियुक्त कार्यालयों की शुद्धता सुनिश्चित करने के साधन के रूप में, ग्रेगोरियन सुधार ने सभी चर्च नेताओं को ब्रह्मचारी होने की आवश्यकता बताई। पादरी की जवाबदेही सुनिश्चित करने के साधन के रूप में, पोप ग्रेगरी ने आम लोगों को पुजारियों और बिशपों की अनैतिक प्रथाओं की खुले तौर पर आलोचना करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इससे यह व्यापक रूप से प्रचारित विश्वास उभरा कि सिमोनियाक्स या सिमोनियाक्स द्वारा नियुक्त किए गए लोगों द्वारा किए गए सभी संस्कार अमान्य थे और उन्हीं पादरियों का पुनर्नियुक्ति आवश्यक था। अनैतिक चर्च नेताओं की वैधता की आलोचना करने की प्रथा को पोप ग्रेगरी द्वारा प्रोत्साहित किया जाना रोमन चर्च को परेशान करेगा और आने वाली पीढ़ियों में धर्मनिरपेक्ष दुनिया की नज़र में इसके अधिकार को कमज़ोर कर देगा। 13वीं शताब्दी की शुरुआत तक, वाल्डो के कई अनुयायी उन पादरियों और बिशपों द्वारा दिए जाने वाले संस्कारों को अस्वीकार कर देंगे, जिनके बारे में यह पाया गया था कि उनकी नैतिकता संदिग्ध है।

इस प्रथा को डोनेटिसिज्म के नाम से जाना जाता है। ग्रेगोरियन सुधार ने रोमन चर्च की आलोचना को गति दी, जो 12वीं शताब्दी ई. में गति पकड़ती चली गई। रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा प्रशिक्षित बाइबिल विद्वानों की बढ़ती संख्या ने भी बाइबिल और नैतिक आधार पर धन और संपत्ति के संचय की चर्च की प्रथा को चुनौती देना शुरू कर दिया। कैथोलिक पदानुक्रम द्वारा अपनाई गई भव्य जीवनशैली की विशेष निंदा की गई, जो आबादी के विशाल बहुमत की गरीबी के बिल्कुल विपरीत थी।

वे चर्च नेता जो प्रभु के नाम पर सेवा करते थे, जिन्होंने स्वयं मानवता के लिए कष्ट सहे और अपनी जान दे दी, वे अपने धन और लोलुपता के कारण ईसा मसीह की शिक्षाओं और अपने पैरिशवासियों की रोजमर्रा की जिंदगी की परिस्थितियों से बहुत दूर थे। 12वीं सदी के शुरुआती दशकों में, पीटर एबेलार्ड एक ऐसे कैथोलिक विद्वान थे जिन्होंने चर्च में विद्वानों की बहस के घेरे में इन मुद्दों को उठाना शुरू किया। एबेलार्ड और अन्य बाइबिल विद्वानों द्वारा व्यक्त चर्च के धन के

संचय और उसके नेताओं के लोलुप जीवन की आलोचना के आधार पर, वाल्डेन्सियन आंदोलन के भीतर सामुदायिक जीवन पर जोर देने का उदय हुआ।

अपने अस्तित्व के दूसरे दशक में, गरीब लियोन और उनके प्रचारक यात्रियों को लोम्बार्डी के गरीबों के रूप में जाना जाने वाला एक और विचलित ईसाई समूह मिला, जिसने सामुदायिक जीवन और आम लोगों की शिक्षा पर अपना जोर केंद्रित किया। जैसा कि पहले कहा गया था, कैथोलिक पदानुक्रम 12वीं सदी के यूरोप में सबसे धनी लोगों में से एक था। व्यक्तिगत धन इकट्ठा करने से चर्च के नेताओं के बीच कई पापों को बढ़ावा मिलता था, जिसमें यौन अनैतिकता, नशे की लत और समाज में कई लोगों की पीड़ा के प्रति उदासीनता शामिल थी।

परिणामस्वरूप, 12वीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी यूरोप में चर्च के नेताओं की अश्लील और अनैतिक प्रथाओं के विरोध में कई आंदोलन उभरे। इन विरोधी आंदोलनों में पेट्रोबुशियन, हेनरीकिस, ह्यूमिलियाटी, अर्नोल्डिस्टी और कैथर्स शामिल थे। आम तौर पर, इन विरोधी आंदोलनों में से प्रत्येक ने गरीबी की शपथ ली और अपने जीवन को यीशु मसीह की शिक्षाओं और जीवन शैली के अनुसार ढाला।

इन समूहों में से, अर्नोल्डिस्टी 13वीं शताब्दी में वाल्डो और लियोन के गरीबों के साथ उभरे। अर्नोल्डिस्ट एक ऐसे व्यक्ति के अनुयायी थे, जिस पर उत्तरी इटली में मिलान के पास एक छोटे से लोम्बार्ड समुदाय ब्रेशिया के एक रोमन कैथोलिक विद्वान और भिक्षु अर्नोल्ड का विश्वास था। अर्नोल्ड का जन्म 1090 में हुआ था और वह महान विद्वान पीटर एबेलार्ड के छात्र थे।

एबेलार्ड की तरह ही रोमन चर्च की संचित संपत्ति और बिशपों और पादरियों द्वारा प्रदर्शित अनैतिक अनैतिकता की आलोचना की गई थी। हालांकि, एबेलार्ड के विपरीत, अर्नोल्ड केवल विद्वानों के अंदाज में धार्मिक विश्वासों पर चर्चा करने से संतुष्ट नहीं थे। एक कर्मठ व्यक्ति के रूप में, उन्होंने अपने दिल के साथ-साथ अपने दिमाग में भी सच्चाई को महसूस किया और अभ्यास किया और दूसरों से भी यही चाहा कि वे मसीह की स्वच्छ, शुद्ध करने वाली, लोकतांत्रिक भावना से प्रेरित जीवन जिएं।

अर्नोल्ड ने एबेलार्ड से नाता तोड़ लिया, 1130 के दशक की शुरुआत में ब्रेशिया लौट आए, और लोम्बार्डी के शहरी क्षेत्रों में 20 से अधिक वर्षों तक अपना संदेश प्रचारित किया। उन्होंने अपने एकीकृत संदेश को यीशु की शिक्षाओं पर केंद्रित किया, जो विशेष रूप से मैथ्यू 25:31 से 46 में पाई जाती हैं, जिसमें यीशु अपने अनुयायियों को गरीबों को खाना खिलाने, नंगे लोगों को कपड़े पहनाने और बीमारों से मिलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने प्रेरितों के काम 2:44 से 47 और प्रेरितों के काम 4:32 से 37 में ईसाई सामुदायिक जीवन की प्रकृति पर भी जोर दिया, जिसमें ईसाई समुदाय द्वारा अपने संसाधनों को पूरे समुदाय के बीच साझा करने के लिए समर्पित होने का वर्णन किया गया है।

अर्नोल्ड ने साझा संसाधनों के इस संदेश का प्रचार किया, मेरे भाइयों और बहनों, इनमें से सबसे कमजोर की देखभाल करने के साथ-साथ प्रेरितों के कार्य में प्रकट अन्य नैतिक सुधारों का भी प्रचार किया। रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा बाइबिल के लैटिन अनुवाद, वुल्गेट के उपयोग के

विपरीत, अर्नोल्ड ने अपने अनुयायियों को स्थानीय भाषा में सुसमाचार संदेश दिया। अर्नोल्ड के उपदेश ने रोमन चर्च और बाइबिल के एकमात्र चर्च-स्वीकृत अनुवाद के रूप में वुलोट के उपयोग पर उसके जोर के लिए एक बड़ा खतरा पैदा कर दिया।

चूँकि वह चर्च द्वारा धन संचय के लिए खुले तौर पर आलोचना करते थे, जैसा कि इसके पदानुक्रम की भव्य शैली द्वारा दिखाया गया था, अर्नोल्ड ने चर्च से जोरदार तरीके से अपनी चर्च की भूमि को शहर-राज्यों को सौंपने का आह्वान किया। उनके अपने शब्दों में, पादरी जो संपत्ति के मालिक हैं, बिशप जो राजसी पद और शाही भूमि अनुदान रखते हैं, और भिक्षु जिनके पास संपत्ति है, उन्हें संभवतः नहीं बचाया जा सकता है। ये चुनौतियाँ रोमन कैथोलिक चर्च के लिए एक बड़ा खतरा साबित हुईं।

परिणामस्वरूप, अर्नोल्ड को एक विधर्मी, चर्च का दुश्मन करार दिया गया और 1155 में रोम में उसे जला दिया गया, वाल्डो के मंत्रालय शुरू करने से लगभग 20 साल पहले। उनके स्वास्थ्य के बावजूद, उनका संदेश और उनके अनुसरण करने वाले समुदाय लोम्बार्डी में बने रहे। अर्नोल्डिस्टों ने जीवंत, यद्यपि छोटे, ईसाई समुदायों की स्थापना की थी, जो तीस साल बाद भी चल रहे थे जब वाल्डो की यात्राएं उन्हें लोम्बार्ड क्षेत्र में ले आईं।

1184 से पहले, चर्च पदानुक्रम के लिए वाल्डेस के मुद्दे पादरी के थे, मिशनरी गरीबी के लिए एक बहुत शक्तिशाली अंतर्वेशन और एक संस्थागत पादरी के अनुष्ठान कानूनी अधिकारों के बीच संघर्ष। वाल्डेस और उनके अनुयायियों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने उत्साह को एक ऐसे पदानुक्रम के अधिकार क्षेत्र में प्रस्तुत करें जो प्रेरितिक गरीबी और उनके पुनर्जन्म वाले मिशन की भावना के प्रति उनकी उत्कट आकांक्षा को साझा नहीं करता था। पोप के आदेशों को मानने से इनकार करने के कारण, वाल्डेस और उनके अनुयायी चर्च के अधिकार के लिए एक बेलगाम खतरा बने रहे।

इस वजह से, 1184 में, वाल्डो को विद्रोही करार दिया गया और ल्योन से निर्वासित कर दिया गया। जवाब में, वाल्डो के अनुयायियों ने सुसमाचार का आदर्श वाक्य अपनाया कि उन्हें सुसमाचार का प्रचार करने और सिखाने के लिए जोड़े में भेजा जाएगा। वाल्डो और उनके अनुयायी, प्रचार साथी, पूर्व की ओर यात्रा पर निकल पड़े।

और जैसा कि हमने पहले कहा है, यह उन संबंधों का हिस्सा था जो उन्होंने लोम्बार्डी क्षेत्र में स्थापित किए थे। लोम्बार्डी के गरीबों ने अपने संगठन को अधिनियम 4 और 5 में पाए जाने वाले प्रारंभिक ईसाई समुदायों और जेम्स के पत्रों और टिमोथी को पॉल के पत्र में व्यक्त किए गए मंत्रालय के व्यावहारिक उदाहरणों के आधार पर बनाया। लोम्बार्डी के गरीबों ने अपनी जीवनशैली में व्यावहारिकता और स्थिरता की एक ऐसी डिग्री लाई जो वाल्डो के आंदोलन में नहीं पाई गई।

ल्योन के गरीबों और लोम्बार्डी के गरीबों का एक ही बंधन था कि वे गरीबी में जीवन जीने के लिए प्रतिबद्ध थे और ईसा मसीह के समर्पित शिष्य बन गए थे। वर्ष 1205 तक, ये दोनों समूह एक-दूसरे से जुड़ गए थे, लेकिन उनके फोकस में स्पष्ट रूप से भिन्नता थी। जबकि वाल्डो ने उपदेश

देने और श्रोताओं द्वारा दिए गए दान को जीविका के एकमात्र साधन के रूप में स्वीकार करने पर एकतरफा ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया, लोम्बार्डी के गरीबों ने प्रत्येक वयस्क को समुदाय में सभी के कल्याण के लिए काम करने पर जोर दिया।

परिणामस्वरूप, श्रम का प्रश्न दोनों समूहों के बीच विवाद का मुख्य बिंदु था। लोम्बार्डी के गरीबों के प्रत्येक सदस्य ने समुदाय की भलाई के लिए अपनी प्रतिभाओं को पेश करने के लिए अपने स्वयं के व्यापार और कौशल विकसित किए। बाद की पीढ़ियों में, एक व्यवहार्य व्यापार होना वाल्डेन्सियन प्रचारकों के लिए अच्छा साबित हुआ जब इनकिजिशन ने उन्हें जीवित रहने के साधन के रूप में गोपनीयता की ओर धकेल दिया।

ल्योन के गरीबों के अस्तित्व के शुरुआती दशकों के दौरान, एक रोमन कैथोलिक विद्वान जो लैटिन के उपयोग में पारंगत था, ल्योन के गरीबों में शामिल हो गया और आंदोलन को बौद्धिक अखंडता और गहन धार्मिक आधार प्रदान किया जिसकी उसे आवश्यकता थी। इस विद्वान का नाम डूरंड ऑफ ह्यूस्का था। उनका सबसे बड़ा योगदान ल्योन के गरीबों और दक्षिणी फ्रांस में विधर्मी कैथर्स के खिलाफ प्रचार करने के उनके मिशनरी कार्य का मार्गदर्शन करने के लिए लिखी गई एक पांडुलिपि थी।

कैथर्स ईसाई धर्म की एक विधर्मी शाखा थी, जो ईश्वर की प्रकृति की द्वैतवादी व्याख्या को अपनाती थी। वे सिखाते थे कि पुराने नियम का ईश्वर दुष्ट था और भौतिक क्षेत्र से संबंधित हर चीज़ अपने स्वभाव से दुष्ट थी। इसके विपरीत, कैथर्स का मानना था कि नए नियम का ईश्वर अच्छा था।

कैथर्स ने प्रचार किया कि यीशु एक भौतिक मानव नहीं हो सकते क्योंकि सभी भौतिक प्राणी, अपने स्वभाव से, बुरे होते हैं। इसके बजाय, उनका मानना था कि यीशु एक आध्यात्मिक प्राणी थे जो वास्तव में पीड़ित नहीं थे। इस गलत विश्वास प्रणाली के निहितार्थों को लिबर एंटीहेरेसिस नामक एक ग्रंथ में एक अलग धर्मोपदेश में संबोधित किया जाएगा।

डूरंड ने कैथर्स की गलत मान्यताओं का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने और जनता को मदर चर्च की ओर वापस लाने के लिए लिबर एंटीहेरेसिस में ल्योन के गरीबों के लिए एक अत्यधिक विकसित धार्मिक रूपरेखा और निर्देशों का सेट प्रदान किया। लिबर एंटीहेरेसिस वाल्डेन्सियन आंदोलन में डूरंड का सबसे बड़ा योगदान था, जिसने आंदोलन को ठोस धार्मिक फोकस प्रदान किया। इस दस्तावेज़ की कई रोमन कैथोलिक पादरियों और बिशपों ने कैथरिज्म के पाखंड के खिलाफ चर्च की लड़ाई में एक प्रभावी उपकरण के रूप में सराहना की थी।

1206-1207 में वाल्डो की मृत्यु के बाद के वर्ष में, ह्यूस्का के डूरंड ने वाल्डो के अनुयायियों को रोमन कैथोलिक चर्च के साथ फिर से जोड़ने के लिए बहुत व्यक्तिगत प्रयास करना शुरू कर दिया। हालाँकि, वाल्डेन्सियन आंदोलन को मदर कैथोलिक चर्च के साथ फिर से जोड़ने के उनके प्रयास अंततः असफल साबित हुए। वाल्डो के अनुयायियों द्वारा स्थानीय भाषा में सार्वजनिक रूप से प्रचार करने के आग्रह के परिणामस्वरूप, रोमन कैथोलिक चर्च ने आम लोगों के स्थानीय भाषा में प्रचार करने और बाइबिल के अनुवाद का उपयोग करने के अधिकार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और वाल्डो के सभी अनुयायियों को बहिष्कृत कर दिया।

ह्यूस्का के डूरंड और उनके कई अनुयायी वाल्डो के अनुयायियों की तुलना में अधिक उदार थे, और इसलिए, वे रोम के साथ समझौता करने के लिए तैयार थे। डूरंड का मानना था कि मदर चर्च के साथ एकता उपदेश देने के अधिकार से अधिक मूल्यवान थी। वह और उसके सहयोगियों का एक समूह 1208 में रोमन कैथोलिक चर्च के साथ फिर से जुड़ गया।

कुछ समय के लिए, डूरंड का मानना था कि ल्योन के गरीबों और रोमन कैथोलिकों को फिर से एक करना संभव है। लेकिन दोनों के बीच एकीकरण के पुल के रूप में काम करने के असफल प्रयासों के बाद, डूरंड ने रोमन कैथोलिक चर्च के भीतर एक नया आंदोलन शुरू करने की वकालत की, जिसे गरीब कैथोलिक कहा जाता है। 1208 में, पोपसी ने गरीब कैथोलिकों के गठन को मंजूरी दे दी, ताकि आम लोगों की लोकप्रियता और गति को गरीबी की शपथ की ओर और वाल्डो के अनुयायियों से दूर, रोमन चर्च की ओर वापस लाया जा सके।

रोमन चर्च द्वारा गरीब कैथोलिकों को अधिकृत किए जाने के कुछ वर्षों के भीतर, फ्रांसिस ऑफ असीसी नामक एक युवा धर्मातरित व्यक्ति ने अपने परिवार की संपत्ति को त्याग दिया और गरीबी की शपथ लेकर चर्च के भीतर एक निर्धारित आह्वान को पूरा करने की कोशिश की। चर्च पदानुक्रम ने फ्रांसिस ऑफ असीसी को एक विश्वसनीय संसाधन के रूप में देखा जिसके माध्यम से बड़े चर्च के भीतर गरीब कैथोलिकों के संगठन के पीछे के सिद्धांतों को एकीकृत किया जा सके। परिणामस्वरूप, पोपसी ने फ्रांसिस ऑफ असीसी के नेतृत्व में एक नया मठवासी आदेश स्थापित करने का फैसला किया।

वाल्डो और अर्नोल्डिस्ट द्वारा विकसित कई सिद्धांतों को अपनाकर, फ्रांसिस्कन आदेश, जो 1212 में शुरू हुआ, ने अपने समूह के भीतर गरीबी, विनम्रता और सेवा का जीवन अपनाया। लोम्बार्डी के गरीबों की तरह, फ्रांसिस्कन ने यीशु मसीह के अनुरूप जीवन शैली को अपनाकर अपने अनुयायियों को शिक्षित करने के महत्व पर जोर दिया। यह सुझाव देना ऐतिहासिक रूप से भ्रामक होगा कि फ्रांसिस ऑफ असीसी और फ्रांसिस्कन आंदोलन ने खुद को सीधे वाल्डो और ल्योन के गरीबों के अनुरूप बनाया।

फ्रांसिस का ज्यादातर ज़ोर धर्मग्रंथों की उनकी अपनी खोज से आया, लेकिन फ्रांसिस टस्कनी में पले-बढ़े, जहाँ वाल्डो के आंदोलन के संदेश और प्रभाव का प्रचार किया गया और व्यापक रूप से प्रसारित किया गया। यह तथ्य, डूरंड की मातृ चर्च में वापसी और रोमन चर्च के भीतर गरीब कैथोलिकों की स्थापना के साथ, रोमन चर्च के भीतर यीशु की पीड़ित मानवता और गरीबी पर आधारित स्वीकृत चर्च व्यवस्था के सिद्धांतों के लिए उपजाऊ जमीन तैयार करता है। फिर भी, चर्च ने ल्योन के गरीबों के आम लोगों के नेतृत्व वाले सुसमाचार प्रचार के जोर को पूरी तरह से अपनाने का विरोध किया।

इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि अगर ल्योन के गरीबों की सुसमाचार प्रचार सेवा उनके अस्तित्व के पहले 30 वर्षों में व्यापक रूप से लोकप्रिय और तेज़ी से फैलती नहीं होती, तो चर्च ने फ्रांसिस्कन का आदेश नहीं बनाया होता। यह ठीक इसलिए था क्योंकि ल्योन के गरीब और लोम्बार्डी के गरीब, जिन्हें रोमन कैथोलिक जिज्ञासुओं द्वारा अपमानजनक रूप से वाल्डेन्सेस के रूप में संदर्भित किया जाता था, धार्मिक रूप से रोमन कैथोलिक चर्च की कई मूल मान्यताओं के

साथ निकटता से जुड़े हुए थे, इसलिए उनके प्रचार प्रयासों का जनता पर किसी भी समकालीन धार्मिक आंदोलन की तुलना में कहीं अधिक प्रभाव पड़ा। ईसाई धर्म के उनके संदेश का व्यापक प्रभाव मुख्य कारण बन गया जिसके कारण रोमन कैथोलिकों ने वाल्डो के अनुयायियों को नष्ट करने की कोशिश की।

एक गुमनाम लेकिन सुविज्ञ चर्चीय जिज्ञासु ने 1260 के दशक में पहली बार लिखे गए एक ग्रंथ में दावा किया कि वाल्डेन्सेस चर्च द्वारा सामना किए जाने वाले सभी विधर्मी समूहों में सबसे खतरनाक थे। चर्च पदानुक्रम द्वारा अपनाई गई यह घोषणा कई कारणों से थी, जिसमें संदेश की व्यापक और बहुत लोकप्रिय स्वीकृति, धन संचय करने वाले चर्च नेताओं की आलोचना और यह तथ्य शामिल था कि ल्योन के गरीब रोमन चर्च के हर धार्मिक विश्वास का पालन करते थे - अंत में, लैटिन के बजाय लोगों की भाषा में उनके सरल उपदेश की प्रभावशीलता।

यह ध्यान देने योग्य है कि वाल्डो द्वारा ल्योन में अपना आंदोलन शुरू करने के 50 साल के भीतर, रोमन कैथोलिक चर्च ने सार्वजनिक स्थानों पर परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के वाल्डो के आह्वान का जवाब देते हुए अपना स्वयं का आधिकारिक आदेश, डोमिनिकन समर्पित वचन की घोषणा के लिए बनाया, जिसे ऑर्डो प्रेडिकेटोरम कहा जाता है। दूसरा जोर, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, गरीबी को दूर करने के लिए समर्पित फ्रांसिस्कन आदेश का निर्माण था। लेकिन 13वीं शताब्दी की शुरुआत के कैथोलिक चर्च और वाल्डेन्सियन के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर था क्योंकि वे मंत्रालय के इन दो मूलभूत तत्वों के करीब पहुँचे थे।

शुरुआत में, कैथोलिक चर्च ने ईश्वर के वचन की घोषणा को डोमिनिकन और बेनेडिक्टिन को सौंपकर उद्घोषणा और गरीबी पर धार्मिक जोर को अलग रखा, जबकि गरीबी के अधिकार पर धार्मिक जोर को फ्रांसिस्कन ने अपनाया। यह माना जाना चाहिए कि वाल्डेन्सियन पहला संगठित ईसाई मंत्रालय था जहाँ इन दो तत्वों को एकीकृत किया गया और नेतृत्व के मॉडल में शामिल किया गया। पृथक्करण के इस भेद ने रोमन कैथोलिक चर्च को अपनी संपत्ति को सुरक्षित और चुनौती रहित रखने की अनुमति दी, जिससे सुसमाचार के संदेश की अखंडता कम हो गई क्योंकि यह उस खतरे को पहचानने में विफल रहा जो धन और संपत्ति के प्रति अंधी निष्ठा रोमन चर्च की ईसाई गवाही के लिए लाया था।

यह गरीब मसीह था जो यीशु मसीह के शिष्यों के रूप में सेवा कर रहा था, जो घुमंतू प्रचार और गरीबी का एकीकृत जीवन जी रहा था, जिसकी बढ़ती लोकप्रियता को पोप अब और अनदेखा नहीं कर सकता था, जिसके कारण चर्च ने कैथोलिक आदेशों का एक समूह स्थापित किया जहाँ गरीबी और प्रचार दोनों एकीकृत थे। 1220 के दशक में, ऑर्डो प्रेडिकेटोरम के पोप संगठन के साथ, कैथोलिक प्रचार आदेशों की स्थापना ने फ्रांसिस्कन, बेनेडिक्टिन और डोमिनिकन को गरीबी की शपथ लेने और लोगों की भाषा में प्रचार करने का अधिकार दिया। और फिर भी, अधिकांश पुजारी और बिशप इन पवित्र आदेशों के प्रति समर्पित नहीं थे और उनसे बंधे नहीं थे।

पश्चिमी यूरोप में इन तीन कैथोलिक संप्रदायों और वाल्डेन्सियन आंदोलन के सीमित प्रभाव से परे, नियुक्त ईसाई नेताओं के संदेश और जीवनशैली की अखंडता पर एक एकीकृत जोर उभरने में 300 साल और लगेंगे। 16वीं शताब्दी की शुरुआत में मार्टिन लूथर और प्रोटेस्टेंट सुधार तक ऐसा

नहीं हुआ। अंत में, यह ध्यान देने योग्य है कि मसीह की गरीबी और विनम्रता पर ध्यान केंद्रित करने की उत्पत्ति को उस ईसाई कला में देखा जा सकता है जो इस समय के युग में बनाई गई थी।

13वीं शताब्दी से पहले, रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा यीशु मसीह की प्रकृति के बारे में संप्रेषित प्रमुख दृश्य क्रिस्टोलॉजिकल जोर पेंटोक्रैटर, ब्रह्मांड के भगवान के रूप में पुनर्जीवित मसीह पर था। पेंटोक्रैटर के रूप में मसीह को सोने और सफेद रंग की अधिकता के साथ दर्शाया गया था, जो मसीह के सार्वभौमिक शासन की छवि के रूप में पुनर्जीवित प्रभु की शक्तिशाली और विजयी उपस्थिति को दर्शाता था। सभी राष्ट्रों और सृष्टि पर प्रभु के रूप में मसीह पर यह जोर 13वीं शताब्दी में चर्च की संपत्ति और शक्ति के खिलाफ निर्देशित सामाजिक और चर्च संबंधी चुनौतियों के साथ नाटकीय रूप से बदल गया।

13वीं शताब्दी के मध्य तक रोमन चर्च में फ्रांसिस्कन आंदोलन के विकास और उत्थान के साथ, फ्रांसिस्कन ने कैथोलिक चर्च के भीतर दृश्य कलाओं में मानवता और यीशु की पीड़ा को सबसे आगे लाया। परिणामस्वरूप, उस समय से ईसा मसीह के विषय को समर्पित रोमन कैथोलिक चर्च की अधिकांश कलात्मक व्याख्या ने यीशु की मानवता और पीड़ित प्रकृति पर जोर देना शुरू कर दिया। क्रूस पर पीड़ित यीशु की छवि, क्रूस पर जोर, रोमन कैथोलिक धर्म में फ्रांसिस्कन आंदोलन का एक महत्वपूर्ण योगदान था।

समय के इस युग के दौरान, यीशु की मानवता पर इस ध्यान ने चर्च के सामूहिक पूजा पर जोर को भी प्रभावित किया और कैथोलिक क्राइस्टोलॉजी को समर्पित धार्मिक संसाधनों और धार्मिक दस्तावेजों के निर्माण में विकसित किया गया। इतिहास के दौरान, ईसाई धर्म के भीतर और बाहर दोनों जगह चर्च के आलोचकों ने विश्वास की अनिवार्यताओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए बहुत कुछ किया है। वाल्डो, अर्नोल्ड और फ्रांसिस ऑफ असीसी ने चर्च को चुनौती देते हुए ईसाई धर्म के आवश्यक धार्मिक जोर को बनाए रखने में मदद की।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर। आमीन।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपनी शिक्षा में है। यह सत्र 4 है, एक कट्टरपंथी भेद, गरीबी की भूमिका।